ISSN 0975-8321

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

Peer Reviewed Journal
(Impact Factor 5.125)

सम्पादक : डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

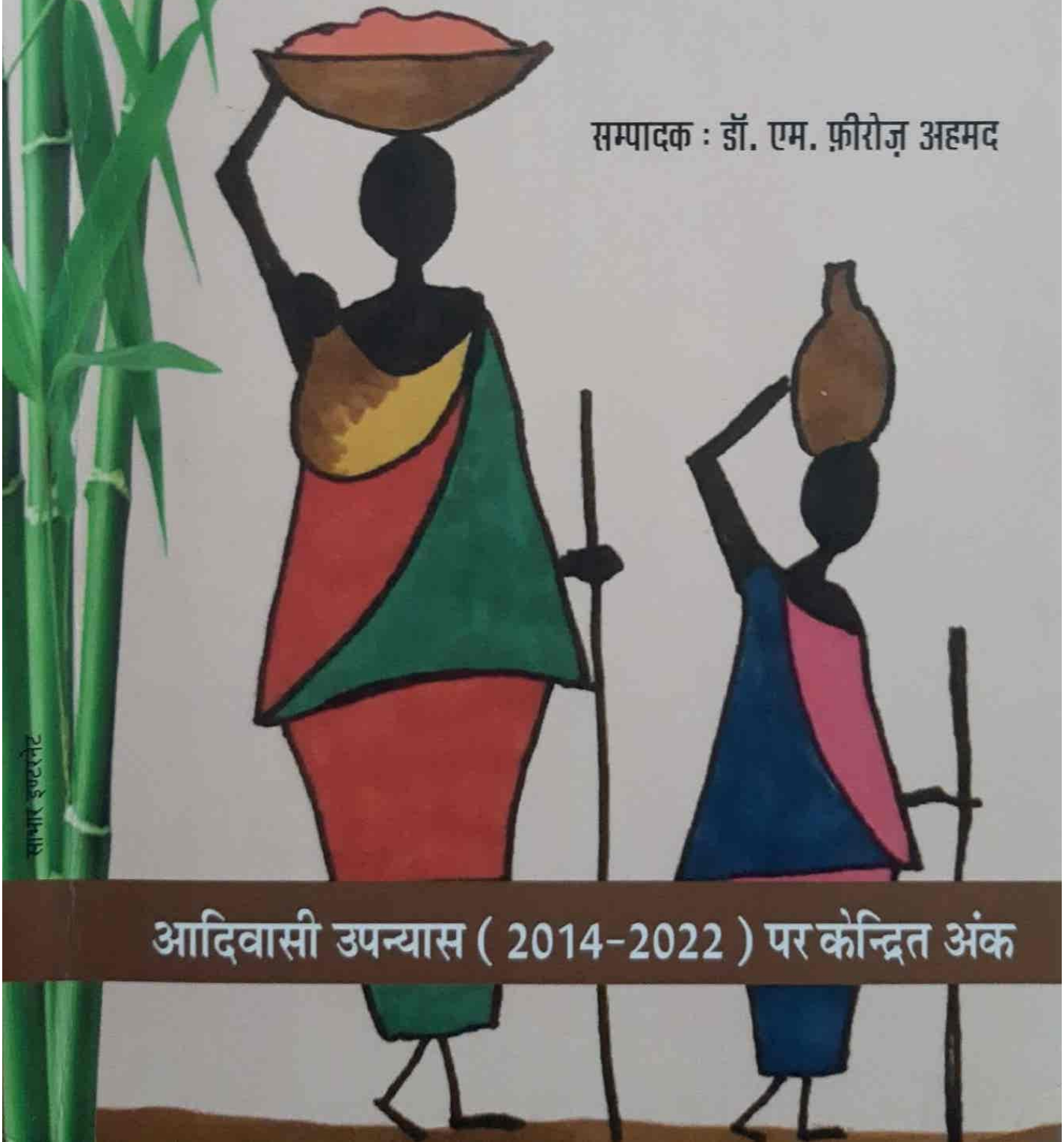

साभार इण्टरनेट

आदिवासी उपन्यास (2014-2022) पर केन्द्रित अंक

आदिवासी जीवन संघर्ष और विद्रोह का यथार्थ दस्तावेज़ : बस्तर 1857

डॉ. प्रीति सिंह

बस्तर 1857 उपन्यास का केंद्र आदिवासी जीवन संघर्ष एवं आदिवासियों द्वारा किया गया विद्रोह रहा है। किंतु राजीव रंजन प्रसाद द्वारा वर्ष 2015 में लिखा गया यह उपन्यास अनेक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। बस्तर के इतिहास, संस्कृति एवं परंपराओं का कथानक बुनते हुए वहाँ उत्पन्न राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं से जोड़ते हुए राजीव रंजन प्रसाद ने अभूतपूर्व उपन्यास की रचना की है। जो ऐतिहासिक तथ्यों को अपने कथानक में उद्‌घाटित करता है। यह उपन्यास आदिवासियों की मूल संस्कृति, जीवन दर्शन, उनका प्राकृतिक प्रेम, उनकी धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक परंपराओं को भी अभिव्यक्ति देता है। उपन्यास में अंग्रेजों के विरुद्ध आदिवासियों द्वारा किए गए विद्रोह का वर्णन अत्यंत विस्तार एवं गंभीरता से किया गया है, साथ ही इस उपन्यास के माध्यम से बस्तर की सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को बहुत नज़दीक से देखने का अवसर भी प्राप्त होता है। आदिवासियों द्वारा अंग्रेज़ों के खिलाफ किए गए विद्रोह अथवा आंदोलन को इतिहासकारों ने एवं विद्वानों ने स्थान नहीं दिया, जिसके वह वास्तव में अधिकारी थे। बस्तर 1857 उपन्यास में इन्हीं बिंदुओं पर लेखक ने गंभीरता से चर्चा की है।

"वर्ष 1857, भारतीय इतिहास में मील का पत्थर है। अनायास नहीं था कि ईस्ट इंडिया कंपनी के बढ़ते दायरों और ज्यादतियों के विरुद्ध विद्रोह आरंभ हुए। सिपाही विद्रोह अथवा गदर कह कर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को कमतर आकने की वृत्ति रही है। ...वस्तुतः यही वह समय है जब कहीं गोंड, कहीं भील, तो कहीं संताल आदिवासी संगठित रूप में अपना विरोध व्यक्त कर रहे थे।"[1]

देखा जाए तो जब हम इतिहास की पुस्तकों को देखते हैं, तो आदिवासी संघर्षों का वर्णन वहाँ नगण्य है। उपन्यास में बस्तर केंद्र में है, उसके साथ दंतेवाड़ा, जगदलपुर,